26.6.72 अव्यक्त बापदादा ओम् शान्ति

आप सभी का लक्ष्य परफेक्ट बनने का है ना। परफेक्ट अर्थात् कोई भी डिफेक्ट नहीं। अगर डिफेक्ट होंगी तो उसकी निशानी क्या होंगी? कोई न कोई प्रकार का चाहे मनसा संकल्प में चाहे सम्पर्क वा सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से माया का जरा भी इफेक्ट होने कारण डिफेक्ट होता है। जैसे शरीर को भी कोई बातका इफेक्ट होता है तब बिमारी अर्थात् डिफेक्ट होता है। जैसे शरीर को मौसम का इफेक्ट हो जाता है वा खान-पान का इफेक्ट होता है तब बिमारी आती है। तो कोई भी डिफेक्ट न रहे इसके लिये माया के इफेक्ट से बचना है। कोई न कोई प्रकार से इफेक्ट आ जाता है इसलिये परफेक्ट नहीं होसकते। तो कोशिश यह करनी है कोई भी प्रकार का इफेक्ट न हो। इफेक्ट प्रुफ हो जाये। इसके लिये साधन भी समय प्रति समय मिलते रहती है। मन्सा को इफेक्ट से दूर कैसे रखो, वाचा को कोई भी इफेक्ट से दूर कैसे रखो वा कर्मणा में भी इफेक्ट से दूर कैसे रहो, एक एक बात में अनेक प्रकार की युक्तियाँ बताई हुई है। लेकिन इफेक्ट हो जाता है बाद में वह साधन करने को कोशिश करते हो। समझदार जो होते हैं वह पहले से ही अटेन्शन रखते हैं। जैसे गर्मी की सीजन में गर्मी का इफेक्ट न हो इसका साधन पहले से ही कर लेते उनको कहेंगे सेन्सीबुल। अगर समझ कम है तोगर्मी का इफेक्ट हो जाता है। तो कमल फूल समान सदा इफेक्ट से न्यारा और बाप का प्यारा बनना है। हरेक को अपने पुरुषार्थ प्रमाण वा अपनी स्थिति प्रमाण भी मालूम होता है कि हमारी आत्मा में विशेश किस बातका इफेक्ट समय प्रति समय होता है। मालूम होते हुये उन साधनों को अपना नहीं सकते। चाहते हुये भी उस समय जैसे अनजान बन जाते हैं। जैसे कोई इफेक्ट होता है तो मनुष्य की बुद्धि को डिफेक्ट कर देता है फिर उस समय बुद्धि काम नहीं करती। वैसे माया का भी भिन्न-भिन्न रुप से इफेक्ट होने से बेसमझ बन जाते हैं। इसलिये परफेक्ट बनने में डिफेक्ट रह जाता है। जैसे अपने शरीर की सम्भाल रखना जरुरी है वैसे आत्मा के प्रति भी पूरी समझ रख चलना चाहिए तब ही बहुत जल्दी इफेक्ट से परे परफेक्ट हो जावेंगे। जानते हुये भी कहाँ संग में आकर भी गलती कर देते हैं। समझते भी हैं लेकिन उस समय वातावरण वा कोई भी समस्या के कारण संस्कारों के कारण वा सम्पर्क में आने को शक्ति कम होने कारण फिर फिर उस इफेक्ट में आजाते हैं। सदैव अपने को चेक करना चाहिए कि मुख्य किस बात के निमित इफेक्ट होता है। उस इफेक्ट से सदा अपना बचाव रखना है तब ही सहज परफेक्ट बन जावेंगे। मुख्य पुरुषार्थ यह है। आप लोग हरेक अपने मुख्य इफेक्ट के कारण को जानते तो हो। जानते हुये भी माया वा समस्या इफेक्ट में थोड़ा बहुत ला देती है ना। तो इफेक्ट से अपन को बचाना है। इफेक्ट प्रुफ बने हो? संगदोष, अन्न-दोष न हो उसके तरीके जानते हो तो अपन को इफेक्ट प्रुफ भी कर सकते हो। माया सेन्सी-बुल से अनजान बना देती है। अगर सदा ज्ञान अर्थात् सेन्स में रहे तो सेन्सीबुल कभी किसके इफेक्ट में नहीं आता है। कोई इफेक्ट से बच कर आता है तो कहाजाता है यह तोबड़ा सेन्सी-बुल है। तो माया पहले सेन्स को कमजोर करती है। जैसे सामना करने वाले दुश्मन पहले कमजोर करने की कोशिश करते हैं फिर वार करते हैं तब विजयी बनते हैं। पहले कमजोर करने की कोशिश करती है फिर वार करती है तब विजयी बनते हैं। पहले कमजोर करने का

कई तरीके ढूँढ़ती है। माया दुश्मन भभ् पहले से सेन्स को कमजोर कर देती है। समझ नहीं सकते कि यह राईट है वा रांग है। फिर इफेक्ट हो जाता है। इफेक्ट ही डिफेक्ट का रुप धारण कर लेता है। डिफेक्ट परफेक्ट बनने नहीं देता है। लक्ष्य क्या रखा है? परफेक्ट अर्थात् १६ कला सम्पन्न। थोड़ा बहुत डिफेक्ट है तो 14 कला। तो क्या लक्ष्य रखा है? जो सेन्सीबुल होगा वह सक्सेसफुल जरुर होगा। अच्छा!